जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८०, ☎ : ०२० - २४२१५५८३
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१
संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
: सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

❖ वर्ष ५३ वे ❖ अंक २ व ३ ❖ ऑक्टोबर-नोव्हेंबर २०२१ ❖ वीर संवत २५४७ ❖ विक्रम संवत २०७७

या अंकात	पान नं.		पान नं.
● दीपावली पूजनाची विधी	२३	१०. द्रुमपत्रक	५२
● दीपावली पूजनाचे मुहूर्त	२९	११. बहुतश्रुत - पूजा	५३
● दीप की सर्वस्व-प्रदान वृत्ति ही है - दीपावली	३०	१२. हरिकेशीय	५३
		१३. चित्र - सम्भूतीय	५६
● भगवान महावीर स्वामी अंतिम उपदेश		१४. इषुकारीय	६७
"उत्तराध्ययन सूत्र"		१५. सभिक्षुक	६८
अध्ययन १ ते ३६ संक्षिप्त विवेचन		१६. ब्रम्हचर्य - समाधि स्थान	६८
१. विनय श्रुत	४४	१७. पाप-श्रमणीय	६९
२. परिषह	४५	१८. संजयीय	६९
३. चतुरंगीय	४५	१९. मृगापुत्रीय	७१
४. असंस्कृत	४७	२०. महानिर्ग्रन्थीय	७२
५. अकाम-मरणीय	४७	२१. समुद्रपालीय	७३
६. क्षुल्लक निर्ग्रन्थीय	४८	२२. रथनेमीय	७५
७. उरभ्रीय	४८	२३. केशि-गौतमीय	७६
८. कपिलीय	५१	२४. प्रवचन-माता	७७
९. नमिप्रव्रज्या	५१	२५. यज्ञीय	७७

२६. सामाचारी ७९
२७. खलुंकीय ८०
२८. मोक्षमार्ग–गति ८०
२९. सम्यकत्व–पराक्रम ८१
३०. तपो–मार्ग–गति ९१
३१. चरिण–विधी ९१
३२. अप्रमाद स्थान ९२
३३. कर्म–प्रकृति ९२
३४. लेश्याध्यायन ९३
३५. अनगार–मार्ग–गति ९३
३६. जीवाजीव–विभक्ति ९३
● ऐसी हुई जब गुरु कृपा – खाली नहीं बैठणों ९६
● अष्टम पापस्थानक : माया ९९
● ऐ मेरे मन जरा १०३
● आत्मशुध्दि : दीपपर्व १०४
● जागृत विचार १०५
● सभी धर्मग्रंथों का सार १०५
● कडवे प्रवचन १०५
● अंतिम महागाथा : ३१. सर्वोदय तीर्थ ११५
● सफल होना है तो : चले शांति के पथ पर १२१
● पर्यावरण व महावीरांचा संदेश १२३
● गुण सम्पदा १२८
● हास्य जागृति १२९
● गच्छाधिपती आचार्य श्री दौलतसागर सुरिश्वरजी – १०१ जन्मोत्सव, पुणे १३१
● गणिवर्य श्री वैराग्यरति विजयजी म.सा. श्रुतरत्न पदवी १३२
● युवाचार्य श्री महेंद्रऋषिजी म.सा. – जन्मदिन १३३
● डॉ. आभाश्रीजी तपोत्सव, विश्रांतवाडी १३३
● ओसवाल बंधू समाज, पुणे १३५
● उवसग्गहरं स्तोत्र – कार्यक्रम, पुणे १३६
● श्री. शांतीलालजी मुथा – पुरस्कार १३७
● सॉलिटेयर ग्रुप, पुणे – मॅरेथॉन १३९
● पू. जागृतीजी म.सा. – सन्मान १३९
● जयवंत ग्रुप, पुणे १४०
● श्री विजय वल्लभ स्कूल, पुणे १४०
● जैन रत्न श्री भिकमचंदजी कटारिया पथ, पुणे – उद्घाटन १४१
● डॉ. मनिषा बोरा – पीएच.डी. १४१
● सामुदायिक क्षमापना, पुणे १४३
● अपंग व्यक्तिंना सम्मेतशिखरजी यात्रा १४३
● श्री. अमित मुथा – अहमदनगर १४४
● आनंद तीर्थ, चिचोंडी – चातुर्मास १४५
● सोलापूर जैन संघ – निवड १४५
● डॉ. संजयजी चोरडिया – निवड १४७
● सुर्यदत्ता कॉलेज ऑफ हेल्थ सायन्स १४८
● सुर्यदत्ता इंजिनियरींग अॅवार्ड, पुणे १४९
● कु. वृष्टी जैन, युपीएससी परीक्षेत यश १४९
● श्री जिन कुशल सेवा मंडल, पुणे १५१
● समग्र जैन चातुर्मास सूची २०२१ १५२
● गुरुद्वार हॉल – दीवान टोडरमल जैन १५२
● प्री वेडिंग शूटिंग को बंदी, पुणे १५३
● डायग्नोपिन, निगडी – उद्घाटन १५३
● नामको हॉस्पिटल, नाशिक १५५
● अरिहंत जागृती मंच, पुणे १५५

- EWS सर्टिफिकेट बनवाये १५६
- श्री. राजेंद्रजी मुथा – समाजरत्न १५९
- भगवान महावीर कल और आज – पुस्तक प्रकाशन १५९
- गुरु तारक महोत्सव, पुणे १६०
- जैन तीर्थों की समस्याएँ १६१
- मारवाडी री सीख १६१
- तुलना – अवहेलना की प्रेरणा १६३
- प्रकृति के तीन कडवे नियम १६५
- धर्म कहाँ से प्रारंभ करें १६६
- दृष्टि चाहिए १६८
- आई वडिलांना जिवंतपणीच जपा, थोडे प्रेम द्या १७१
- अर्हम् फौंडेशन, पुणे १७३
- आत्मिक ज्योति का प्रकाश स्तंभ १७४
- दीप सदा प्रकाशमान रहें १७५
- करें सोच समझकर १७५
- सुखी जीवन की चाबियाँ १७६
- संयम १७७
- कु. श्रेया जैन – दीक्षा १७९
- श्री. सुनीलजी बाफना, घोडनदी – निवड १७९
- श्रीमती मदनबाई सांखला – इच्छापत्र १८१
- राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री. इकबाल सिंह लालपुरा १८३
- कर्मवीर भाऊराव पाटील १८४
- दीक्षा १८७
- रिश्ते... क्यों बिगडे रहें, बिखर रहें १९०
- धर्माच्या कॉलम मध्ये जैन लिहा १९३
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर • एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

या अंकाची किंमत १०० रुपये.

- www.jainjagruti.in
- www.facebook.com/jainjagrutimagazine

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/ड्राफ्ट/AT PAR चेक/पुणे चेकने/ RTGS/SBI Online/ Google Pay/Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA **Branch : Market Yard, Pune 37.**
Current A/c No. : 10521020146 **IFS Code : SBIN0006117**

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षीत आहेत.

दीपावली पूजन विधी

त्योहारों में सर्वश्रेष्ठ त्योहार दीपावली क्योंकि इसे भारतभर में बड़े उत्साह और उमंग के साथ मनाया जाता है । यह दीपकों का, प्रकाश का, चैतन्य का, शुभ संकल्पों का मंगलमय त्यौहार है ।

जैन समाज में इस त्योहार का विशेष महत्त्व इसलिए है कि इसी दिन अमावस्या को भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण हुआ था । वे जन्म-मृत्यु के दुखों से मुक्त होकर मोक्ष गामी हुए । चतुर्दशी और अमावस्या ये दो दिन लगातार भ. महावीर स्वामी जनसमुदायों को अंतिमदेशना (उपदेश) देते रहे । वह उपदेश ही उत्तराध्ययन सूत्र है । जिसका पठन-पाठन श्रवण इन दिनों में किया जाता है । कई महानुभाव बडी श्रध्दा के साथ उपवास करते है । भ. महावीर का जाप करते हैं । पौषध के साथ उपवास करते हैं । कार्तिक सूद प्रतिपदा के दिन प्रथम गणधर गौतमस्वामीजी को केवलज्ञान प्राप्त हुआ । नए वर्ष के प्रात:काल में गौतमस्वामीजी का जाप किया जाता है । सभी भक्त जन सुबह गुरु भगवंतों के मुखारविंद से शुभ मांगलिक श्रवण करते है । मंत्र गर्भित स्तोत्र का श्रवण करते हैं। इसके बाद ही अपने कार्य का प्रारंभ करते हैं ।

दीपावली त्योहार हमारे लिए एक महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक त्योहार है ।

दीपावली पूजन विधी

सर्व प्रथम घर के सभी सदस्य मंगलभावना के साथ तीन बार नवकार महामंत्र का भक्तिसे भर कर उच्चारण करे ।

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिध्दाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं,
एसो पंच णमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।

तीर्थंकरों को वंदन

समवशरण का स्मरण कर पूर्व और उत्तर दिशा के बीच ईशान्य दिशा में महाविदेह क्षेत्र है वहाँ बीस विहरमान तीर्थंकर वर्तमान में विराजमान है अत: अत्यंत भावपूर्ण हृदय से उन्हें तीन बार वंदन नमन करें ।

गुरु भगवंत को वंदन

जो गुरु आपने माने हैं उन्हें श्रध्दापूर्वक वंदना करना ।

- शुभ मुहूर्त पर गद्दी या गालीचा बिछाकर भ. महावीर स्वामीजी, श्री गौतम स्वामीजी, श्री लक्ष्मी देवी, श्री सरस्वती देवी के फोटो पूर्व या उत्तर दिशा में रखें ।
- गद्दीपर नई बहियाँ (नोट बुक), बिल बुक, चेक बुक, सुवर्ण-चांदी या धातु के देवी देवताओं के सिक्के, नया पेन पूजा की सामग्री रखें ।
- पूजा के लिए साहित्य - खाने के पान डंढल सहित, सुपारी, लौंग, इलायची, कुंकुम, वासक्षेप अक्षदा (चावल), श्रीफल (नारियल), फूल, घी का दीया, धूप, अगरबत्ती, जल, फल, ईख (Sugar cane), नैवद्य, लक्ष्मी झाडु, लाभ (लाह्या) बत्तासा, मोली, आरती के लिए कपूर।
- पूजा करनेवाले घर का मुखिया तीन नवकार मंत्र का जाप करके हाथ में मोली बाँधे । फोटो, सिक्के इनको तिलक लगाएँ अक्षदा चढावे ।
- गद्दी की दाहिनी तरफ घी का दीया और बायीं तरफ धूप अगरबत्ती लगाएँ । और साईड में ईख (Sugar cane) खडा रखें ।

॥ ॐ अर्हम् नमः ॥

श्री

श्री श्री

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री शुभ 卐 श्री लाभ

श्री आदिनाथाय नमः **श्री शांतीनाथाय नमः**

श्री पार्श्वनाथाय नमः **श्री महावीराय नमः**

श्री सद्गुरूभ्यो नमः

श्री गौतमस्वामी की लब्धि, श्री भरतजी की ऋध्दि,
श्री अभयकुमारकी बुध्दि, श्री कयवन्नाजीका सौभाग्य,
श्री धन्ना शालिभद्रजीकी संपत्ति, श्री बाहुबलीजीका बल,
तथा श्री श्रेयांसकुमार की दानवृत्ती प्राप्त होवे !
श्री जिनशासन की प्रभावना होवे !

॥ श्री सरस्वती देवी नमः ॥ श्री महालक्ष्मी देवी नमः ॥

नूतन वर्ष

वीर संवत २५४८, विक्रम संवत २०७८

कार्तिक सुद १ शुक्रवार दि. ५/११/२०२१

पूजन दिन गुरुवार दि. ४/११/२०२१

∴

卐

- नवकार मंत्र बोलते-बोलते दवात, कलम, दीया, कलश, लक्ष्मी, ईख (Sugar cane) इ. को मोली बांधे । कुंकुम से तिलक करें ।
- नई बही के पहले पन्नेपर बाजु की चौकट का मायना लिखें ।

लिखने के बाद कुंकुम से स्वस्तिक निकालें । नई बहियाँ पिछले वर्ष की अकाऊंट की एक बही, बिल बुक, चेक पुस्तक, लक्ष्मी इ. सभीपर डंढल सहित एक पर एक दो पान रखें । उसपर एक रुपया और उसपर सुपारी, लौंग, इलायची रखें । हाथ में पानी लेकर बही के चारों ओर घुमावे । वासक्षेप, कुंकुम मिश्रित चावल के दाने हाथ में लेकर निम्न श्लोक और मंत्र बोलें ।

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतम प्रभुः ।
मंगलं स्थूलीभद्राद्या, जैन धर्मोस्तु मंगलम् ।
मंत्र – ॐ आर्यावर्ते, आस्मिन् जंबूद्वीपे
दक्षिणार्धभरते भरतक्षेत्रे-भारतदेशे (पूना) नगरे
ममगृहे श्री शारदा देवी, श्री लक्ष्मीदेवी
आगच्छ आगच्छ, तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ।

अक्षदा बहीपर अर्पण करें । बाद में निम्नलिखित स्तुति का पठन करें ।

॥ स्तुती ॥

स्वश्रीयं श्रीमद् अरिहंता, सिद्धः पुरीपदम्,
आचार्यः पंचधाचारं, वाचकां वाचनांवराम्।
साधवः सिद्धी साहाय्यं वितन्वन्तु विवेकिनाम्,
मंगलानां च सर्वेषां, आद्यं भवति मंगलम् ।
अर्हमित्यक्षरं माया, बीजं च प्रणवाक्षरम्,
एवं नाना स्वरूपं च, ध्येयं ध्यायन्ति योगिनः।
हृत्पदं षोडशदलं, स्थापितं षोडशाक्षरम्
परमेष्ठिस्तुते बीजं, ध्यायेक्षरदूरदं मुदा ।
मंत्रणामादिमं मंत्रं, तंत्र विघ्नौघ निग्रहे,
ये स्मरन्ति सदैवेनं, ते भवन्ति जिन प्रभा ॥

तत्पश्चात् निम्नलिखित मंत्र जप करते-करते **जल, चंदन, पुष्प (फूल), धूप, दीप, अक्षदा (चावल), फल, नैवेद्य** इन आठ वस्तुओं से वही पूजन करें ।

ॐ ह्रीं श्री भगवत्यै, केवलज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक प्रकाशिकायै, सरस्वत्यै, लक्ष्मयै (जलं) समर्पयामि स्वाहा ।

दूसरी बार यही श्लोक बोलते हुए जल की जगह चंदन बोले इस प्रकार आठों ही वस्तुओं के नाम लेकर आठ बार यह श्लोक बोलें ।

पूजा में सभी सदस्य खडे होकर निम्नलिखित प्रार्थना बोलें ।

।। श्री सरस्वती स्तोत्र ।।

सकल लोक सुसेवित पंकजा
वर यशोर्जित शारद कौमुदी,
निखिल कल्मष नाशन तत्परा
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
कमल गर्भ विराजित भूधना,
मणि किरीट सुशोभित मस्तका,
कनक कुंडल भूषित कर्णिका,
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
वसुहरिद् गज संस्नपितेश्वरी
विधृत सोमकला जगदीश्वरी,
जलज पत्र समान विलोचना
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
निज सुधैर्य जितामर भूधरा,
निहित पुष्कर वृंदल सत्कारा
समुदितार्क सदृतनु बल्लिका,
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
विविध वांछित कामदुधाद्भूता,
विशद पद्म हृदान्तर वासिनी
सुमति सागर वर्धन चंद्रिका,
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।

।। श्री लक्ष्मी स्तोत्र ।।

नमोस्तुते महालक्ष्मी महासौख्य प्रदायिनी
सर्वदा देही मे द्रव्यं, दानाय मुक्ती हेतवे ।। १।।
धनं धान्य धरां हर्ष, कीर्तिम्, आयु: यश: श्रियम्
वाहनाम् दन्तिन् पुत्रान, महालक्ष्मी प्रयच्छ मे ।।२।।
यन्मया वांछितं देवी, तत्सर्वं सफलं कुरू
न बान्ध्यन्ता कुकर्माणि, संकटान्मे निवारय ।।३।।

।। प्रार्थना ।।

सुंदर आरोग्य निवास करे दृढ तन में ।
आशा, उत्साह, उमंग भरे शुचि मन में ।
न हो अनुचित योग प्रयोग धन साधन में ।
उत्कृष्ट उच्च आदर्श जगे जीवन में ।
तम मिटे, ज्ञानकी ज्योति जगत में छाये ।
प्रभु ! दिव्य दिवाली भव्य भाव भर लाये ।

इसके बाद एक थाली में दीया लेकर कपूर से आरती करे - निम्न आरती बोले ।

।। आरती ।।

सकल जिनंद नमी करी, जिनवाणी मन लाय ।
सरस्वति लक्ष्मी करू आरती, आतम सुगुरू पसाय ।।
ज्ञान जगत में सार हैं । ज्ञान परम हितकार ।
ज्ञान सूर्य से होता है, दुरित तिमिर अपहार ।।
श्री सरस्वती प्रभाव से, लहे जगत सम्मान ।
ज्ञान बिना पशु सारिखा, पावे अति अपमान ।।
श्रद्धा मूल क्रिया कही, ज्ञान मूल है तास ।
पावे शिव सुख आतमा, इससे अविचल वास ।।
अष्टमपद विशति पदे, सप्तम नवपद ज्ञान ।
तीर्थंकर पदवी लहे, आराधक भगवान ।।

आरती के बाद निम्नलिखित अष्टदोहे बोले ।

।। अष्टदोहे ।।

अंगुष्ठे अमृत वसे लब्धितणा भंडार ।
जय गुरू गौतम समरिये, वांछित फल दातार ।।१।।
प्रभू वचने त्रिपदी लही, सूत्र रचे तेणीवार ।
चऊदह पूरब माँ रचे, लोकालोक विचार ।।२।।
भगवति सूत्र कर नमी, बंभी लिपी जयकार ।
लोकलोकोत्तर सुख भणी, वाणी लिपी अढार ।।३।।
वीर प्रभू सुखिया थया, दिवाली दिन सार ।
अंतर महूरत तत्क्षणे, सुखिया सहू संसार ।।४।।

केवलज्ञान लहे सदा, श्री गौतम गणधार ।
सुरनर पर्षदा आगले घट अभिषेक उदार ।।५।।
सुरवर पर्षदा आगले, भाखे श्री श्रुतनाण ।
नाण थकी जग जाणिये, द्रव्यादिक चौठाण ।।६।।
ते श्रुतज्ञान ने पुजिये, दीप धूप मनोहार ।
वीर आगम अविचल रहो, वर्ष एकवीस हजार ।।७।।
गुरू गौतम अष्टक कही, आणि हर्ष उल्लास ।
भाव भरी जे समरशे, पुरे सरस्वती आस ।।८।।

।। लोगस्स (चउव्वीसत्थव) का पाठ ।।

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ।।१।।
उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।२।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल सिज्जंच वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।३।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं चं।
वंदामि रिट्ठनेमि, पासं तह वध्दमाणं च ।।४।।
एवं मए अभित्थुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा।
चउवीसंपि जिणवरा. तित्थयरा में पसीयंतु ।।५।।
कित्तियवंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ।।६।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।७।।

।। नमोत्थुणं का पाठ ।। (२ बार)

नमोत्थुणं अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, संय-संबुध्दाणं, परिसुत्तमाणं पुरिस-सीहाणं, पुरिस-वर-पुण्डरीयाणं, पुरिसवरगंध-हत्थीण, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोयगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, जीवदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मणायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टीणं दीवोत्ताणं, सरणगइपइट्ठाणं, अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोयगाणं, सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति-सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं।

(दूसरे में - ठाणं संपाविउकामाणं णमो जिणाणं जियभयाणं)

(तिसरे में) णमोत्थुणं मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसयस्स अणेगगुण संजुत्तस्स जाव संपविउ कामस्स ।

।। मंगलपाठ ।।

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते-सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे-सरणं पव्वज्जामि, साहू-सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तधम्मं सरणं पव्वज्जामि। अरिहंतो का शरणा, सिद्धों का शरणा, साधुओं का शरणा, केवलिप्ररुपित दयाधर्म का शरणा। चार शरणा, दुर्गति हरणा और शरणा नहीं कोय, जो भवी प्राणी आदरे तो अक्षय अमरपद होय ।

अंगुष्ठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार ।
श्रीगुरु गौतम सुमरिये, मनवांछित फलदातार।
भावे भावना भाविये, भावे दीजे दान ।
भावे धर्म आराधिये, भावे केवलज्ञान ।
पावे पद निर्वाण ।।

यहाँ दीपावली विधि संपन्न होती है । ●

दीपावली का यह दिन भगवान महावीर का निर्वाण दिन है अत: भगवान के फोटो के सामने बैठकर तन-मन को एकाग्र कर, रात्री में निम्न जप की २०-२० मालाएँ जपें ।

ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामी सर्वज्ञाय नम:

बादमें

ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामी पारंगताय नम:

की मालाएँ गिनें अथवा यथाशक्ति जाप करें।

कार्तिक सूद प्रतिपदा की सूर्योदय से पूर्व स्नानादि के बाद नमस्कार महामंत्र का जप करें और

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामी केवलज्ञानाय नम:

२० माला फेरें ।

फिर यह प्रार्थना बोले...

कुंदिंदुगोखीर तुसार वन्ना
सरोज हत्था कमले निसन्ना
वाएसिरी पुत्थय वग्ग हत्था
सुहायसा अम्ह सया पसत्था

इस प्रार्थना के बाद विद्या संपदा का महान ओजस्वी मंत्र का अवश्य जप करें (२० माला)

ॐ ह्रीं ॐ

जैन मंदिर या स्थानक में जाकर संतों का प्रभु का दर्शन करें । मांगलिक श्रवण करें । गौतम स्वामी को मध्यरात्री के बाद भली सुबह केवलज्ञान प्राप्त हुआ अत: उस समय 'गौतम रास' अवश्य गावें ।

दीपावली की इस विधि का यथायोग्य पालन करें। सबका भला हो मंगल हो - कल्याण हो । ●

सन २०२१ चे दीपावली पूजनाचे मुहूर्त

❖ **पुष्प नक्षत्र : अश्विन (मारवाडी मिती कार्तिक) वद ७**

गुरुवार दि. २८-१०-२०२१ : ✲ सकाळी ११.०० ते १२.३० चल ✲ दुपारी १२.३० ते २.०० लाभ ✲ २.०० ते ३.३० अमृत ✲ सायंकाळी ५ ते ६.३० शुभ ✲ ६.३० ते ८.०० अमृत ✲ ८ ते ९.३० चल

शुक्रवार दि. २९-१०-२०२१ : ✲ सकाळी ६.३० ते ८.०० चल ✲ ८ ते ९.३० लाभ ✲ ९.३० ते ११ अमृत

❖ **धनत्रयोदशी : (धनतेरस) अश्विन (मारवाडी मिती कार्तिक) वद १३**

मंगळवार दि. २-११-२०२१ : ✲ सकाळी ११.३१ ते १२.३० लाभ ✲ दुपारी १२.३० ते २.०० अमृत ✲ ३.३० ते ५.०० शुभ ✲ सायं. ८ ते ९.३० लाभ ✲ रात्री ११ ते १२.३० शुभ

❖ **महालक्ष्मी पूजन (दीपावली वही पूजन) : (मारवाडी मिती कार्तिक) वद ३०**

गुरुवार दि. ४-११-२०२१ : ✲ सकाळी ११ ते १२.३० चल ✲ दुपारी १२.३० ते २.०० लाभ ✲ २.०० ते ३.३० अमृत ✲ सायं. ५ ते ६.३० शुभ ✲ ६.३० ते ८.०० अमृत ✲ ८.०० ते ९.३० चल ✲ रात्री १२.३० ते २.०० शुभ

✲ वृषभलग्न कुंभनवमांश सायंकाळी ६.४७ ते ७.०० ✲ वृषभलग्न वृषभनवमांश सायंकाळी ७.२६ ते ७.३९ ✲ वृषभलग्न सिंहनवमांश सायंकाळी ८.०७ ते ८.२० ✲ सिंहलग्न वृषभनवमांश रात्री १.११ ते १.२४ ✲ सिंहलग्न सिंहनवमांश रात्री १.५५ ते २.०८

❖ **नूतन वर्ष : वीर संवत २५४८, विक्रम संवत २०७८, कार्तिक शु।। १**

शुक्रवार दि. ५-११-२०२१ : ✲ सकाळी ६.३० ते ८ चल ✲ ८.०० ते ९.३० लाभ ✲ ९.३० ते ११.०० अमृत ✲ दुपारी १२.३० ते २ शुभ ✲ सायंकाळी ५.०० ते ६.३० चल

श्री शुभम् भवतु !

प्रेषक : नवीनकुमार बी. शहा - २३० पाटील प्लाझा, मित्र मंडळ चौक, पुणे ९. मो. ९८२२०९०३३९

दीप की सर्वस्व-प्रदान-वृत्ति ही है -दीपावली

लेखक : उपाध्याय अमरमुनि

दीपावली भारतीय पर्वों में महत्त्वपूर्ण पर्व है। कार्तिक कृष्णा अमावस्या प्रकाश पर्व, ज्योति पर्व, लक्ष्मी पर्व, निर्वाण पर्व आदि कई नामों से जाना जाता है। निर्वाण का अर्थ है अखण्ड शांति। दुख से, विकारों से सर्वथा मुक्ति ही निर्वाण है। तीर्थंकर महावीर ने इस रात्रि को निर्वाण पाया था अतः यह निर्वाण पर्व है। इस प्रकार अनेक महापुरुषों की स्मृतियाँ इससे जुड़ी हुई हैं। इतिहास की अनेक घटनाएँ इस पर्व से सम्बन्धित हैं।

प्रकाश की संस्कृति के इस देश ने ज्ञान को प्रकाश कहा है। प्रकाशपूर्ण जीवन यात्रा ही मंगलमय यात्रा होती है। बिना ज्ञान की यात्रा अंधी यात्रा होती है। जैसे अन्धा अंधेरे में भटकता चलता हो। न गन्तव्य का पता, न पथ का पता। ज्ञान रहित यात्रा केवल भटकन होती है।

इस प्रकाश की संस्कृति ने जब आत्मा और परमात्मा की बात कहीं तो उसे परम ज्योति कहा क्योंकि प्रकाश ही एकमात्र उपमा है जो उस स्वरुप को प्रकट कर सके। दीप प्रकाश का प्रतीक है और यह दीपपर्व हमें प्रेरणा देता है कि जब जीवन निराशा के घोर अंधेरे से घिर जाय, मन पीड़ा से भर जाय तब उस हताशा में पुरुषार्थ का दीप प्रज्वलित कर दो। रात्रि है तो है तुम दीप जला लो, अंधकार छिन्न-छिन्न हो जायेगा। तुम्हारे पुरुषार्थ का दीप जब प्रज्वलित होगा तब अभाव का अंधेरा नष्ट होगा। इसीलिए इस दीपपर्व का महत्त्व है।

जो पाया है बाँटो –

प्रश्न होता है कि दीप को क्यों इतना महत्त्व दिया गया ? सूरज को भी आकाश-दीप कहा जाता है। किन्तु वह आकाश दीप ऐसा दीप है जो स्वयं दीप बनकर रह जाता है दूसरा दीप प्रज्वलित नहीं करता। सूरज की किरणों के स्पर्श से कोई दूसरा सूरज बनता नहीं। यह धरती का दीपक ही एक ऐसा दीपक है जो अपने स्पर्श से दूसरे बुझे दीप को प्रज्वलित करता है। अगर कोई दीपपात्र दीप बनने के लिए तैयार है तो उसे अपने स्पर्श से अपने ही जैसा बना देता है। और प्रेरणा देता है कि तुम जीवन में कुछ पा गये हो, किसी ऊँचाई पर पहुँच गये हो, तुम्हारी शक्ति का जागरण हो गया है तो दूसरों को भी दो। दूसरों का भी कुछ निर्माण करो। केवल अपने तक ही सीमित न रह जाओ। दूसरों को भी प्रकाश दो, रोशनी दो। निराशा में आशा का दीप जलाओ। दूसरों को अर्पण करो। जैसे तुम बने हो दूसरों को भी अपने जैसा बनाओं। तुम अगर पिता हो तो अपने पुत्र को अपने जैसा बनाओ। पुत्री को अपने जैसा बनाओ। अगर नेता हो तो राष्ट्र को गौरवशाली बनाओ। अगर तुम गुरु हो तो शिष्य को केवल आहार पानी ढोने के लिए मजदूर मत बना के रखो। उसे भी अपने जैसा बनाओ। अपना प्रकाश दो। ज्ञान के स्पर्श से, विचार की ज्योति के स्पर्श से उसे भी ज्योतिर्मय बनाओ। वह गुरु ही क्या जो अपने शिष्य को गुरु नहीं बनाता। दीपक एक महत्त्वपूर्ण रुपक है जो अपने संपर्क में आनेवाले को अपने जैसा बना देता है।

पारस को महत्त्व देते हैं लोग कि पारस के स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है। सोना तो बन गया इसमें संदेह नहीं हैं लेकिन उस सोने में यह शक्ति नहीं है कि वह अपने स्पर्श से दूसरे लोहे को सोना बना दे। यह दीपक ही है ऐसा जो दूसरे को अपने जैसा बनाता है।

दीपक प्रतीक है समर्पण व समत्व का–

दीया जल रहा है। अंधकार में ज्योति फैला रहा

है। अंधकार को तोड़ रहा है। पथ को रोशन कर रहा है और उसके पास स्पर्श दीक्षा लेने के लिए सम्राट के महल का दीया आता है तो उसे भी अपने स्पर्श से प्रज्वलित कर देता है, दीपक बना देता है। और अगर किसी भिखारी की झोपड़ी का दीपक आता है तो उसे भी उसी प्रेम से, उसी भाव से जैसे सम्राट के महल के दीये को प्रज्वलित किया था ऐसे ही भिखारी के दीये को प्रज्वलित कर देता है। इसी प्रकार किसी ब्राम्हण, किसी क्षत्रिय का दीया आता है तो उसे भी प्रकाशमान करता है और किसी चाण्डाल के घर का दीया आ जाय तो उस अस्पृश्य के घर के दीये को भी अपनी ज्योति के स्पर्श से दीया बना देता है।

महत्त्वपूर्ण प्रेरणा है यह कि तुम शक्तिशाली हो तो तुम्हारी शक्ति का जो दीप जला है उसके स्पर्श से सबको ज्योतिर्मय बनाते चलो। यह मत सोचो कि कोई उच्च है कि नीच है कि कोई साधारण है। इसे ज्योतिर्मय बनाऊँ और इसे न बनाऊँ।

दीये की तो सीमा है। लेकिन भगवान महावीर लोक प्रदीप है। लोगपइवाणं। नमोत्थुणं के पाठ में एक पाठ है ''लोगहियाणं'' लोकहित करनेवाला, दूसरों का हित करनेवाला, लोक में समग्र विश्व आ गया। विश्वात्मा हो गया वह। जो विश्वात्मा होता है, वही परमात्मा होता है। और जो परमात्मा होगा, वह विश्वात्मा होगा ही। वह लोक प्रदीप इसलिए है कि वह लोक हितकर है। समग्र विश्व के हित और कल्याण के लिए भगवान की भगवत्ता की ज्योति प्रज्वलित होती है। प्रकाशमान होती है और समस्त अंधकार को तोड़ देती है। लोक शब्द का अर्थ है सीमा रहित। सीमा नहीं है कहीं। न कोई जाति की सीमा है न राष्ट्र की, न पंथादि की। वह तो सीमातीत है। वह विश्वात्मा है, समग्र विश्व का है। इसलिए लोक प्रदीप है।

भगवान महावीर की पुण्यस्मृति दीपावली के साथ में जुड़ी है, वह दीपमाला के साथ में जुड़ी हुई है। एक दीप नहीं, भगवान अकेला होता ही नहीं। वह तो दीपों की माला बना देता है। हजारों-हजार शिष्य-शिष्याएँ महावीर के दीपस्पर्श से दीप बने हैं। और अंधविश्वास के, अज्ञान के अन्धकार को तोड़ते रहे हैं। इसलिए वे वस्तुतः लोकप्रदीप रहे हैं। अपने शिष्यों को भी उन्होंने दीपक बनाया है। इसलिए हम उन्हें दीपक की उपमा देते हैं। और दीपमाला पर्व पर उनका स्मरण करते हैं।

दीपक महत्त्वपूर्ण है। अकेला दीपक जल रहा हो कोई पूछे उसे क्यों जल रहे हो? वह कहेगा मेरा स्वभाव है। मेरी प्रकृति है। इसका कोई लाभ उठाये तब भी और न उठाये तब भी मेरा स्वभाव है प्रकाशित होना और प्रकाश बिखेरना। निष्काम कर्म की प्रेरणा देता है दीपक। कोई कामना नहीं है कि कोई देख रहा है कि नहीं देख रहा। हमारे कर्म का महत्त्व समझ रहा है कि नहीं समझ रहा है। हमारे कर्म का मूल्यांकन कर रहा है या गलत कर रहा है। कोई अर्थ नहीं है इसका। वह दीपक है जो अकेले में भी जलता रहता है और हजारों जनता की भीड़ में भी जलता रहता है। वह देव मंदिर में भी जो लाखों-करोडों के मूल्य से तैयार किया गया हो उसमें भी जलता रहता है और पूजा पाता है। गरीब की झोपड़ी में भी जलता है और उसे प्रकाशित करता है।

दीपक का संदेश कितना महान है। इसीलिए महापुरुषों को दीपक की उपमा निरन्तर दी गई है। भगवान महावीर लोकप्रदीप है, लोक हितकर है।

एक बात समझने की कोशिश करे –

जो तीर्थंकर है और जो अर्हन्त है, जिन है, वीतराग या केवली है। क्या फर्क है उनमें। तीर्थंकर और केवली में क्या अन्तर है? वस्तुतः तीर्थंकर और अर्हन्त में जो अन्तरंग स्वरूप है उसमें तो कोई फर्क नहीं हैं। जैसा तीर्थंकर होता है, केवलज्ञानी वैसा ही होता है। वैसे ही अनन्त ज्ञान है अनन्त दर्शन है अनन्त सुख और अनन्त शक्ति है। फिर भी क्या बात है कि हजारों

केवलज्ञानी भी हो तो वे सब नीचे बैठेंगे और तीर्थंकर सिंहासन पर बैठेंगे। क्या बात है ऐसी? जो भी केवलज्ञानी सभा में आयेगा तीर्थंकर को प्रदक्षिणा देगा तीन। आस-पास अगर कोई केवल ज्ञानी है और तीर्थंकर का समवसरण लगे तो अवश्य ही उन्हें अपनी उपस्थिति समवसरण में देनी होगी। यह विधान है।

तीर्थंकर का पद लोकहितंकर है –

जैन धर्म को लोग आध्यात्मिक धर्म कहते हैं। एकान्त आध्यात्मिक धर्म, एकान्त निवृत्ति का धर्म कहते हैं। मैं पूछना चाहता हूँ आपसे कि क्या तीर्थंकर का पद आध्यात्मिक भूमिका का पद हैं? मैं कहता हूँ तीर्थंकर का पद आध्यात्मिक नहीं है। यह ठीक है कि वे अर्हन्त हैं। अर्हन्त हो चुके जैसे दूसरे अर्हन्त होते हैं वैसे अर्हन्त हो चुके। वे व्यक्ति रुप में अन्तरंग में जो दूसरे अर्हन्तों ने केवलज्ञानियों ने पाया है, भगवान महावीर के ही सात सौ शिष्य और शिष्याओं ने केवलज्ञान पाया है, उन्हीं जैसे हैं। कोई फर्कनहीं है अन्तरंग में। फिर भी तीर्थंकर का पद ऊँचा क्यों हैं? वे सब जिन कहलाते हैं और ये जिनेन्द्र क्यों है? दूसरे जिन है, ये जिनराज क्यों हैं? कर्म के क्षय का रुप नहीं है तीर्थंकर बल्कि कर्म के उदय का रुप है तीर्थंकर। अर्हन्त होना तो कर्म का क्षय है। ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय इन चार कर्मों के क्षय होने पर अर्हन्त होते हैं। है तो ये भी अर्हन्त। इन्होनें भी इन चार कर्मों का क्षय किया है। लेकिन तीर्थंकर जो होते हैं वे कर्म के क्षय से नहीं, वे तो कर्म की जो उत्कृष्ट पुण्य प्रकृति है, उसके उदय से होते हैं। पुण्य का रुप है तीर्थंकर होना क्योंकि वह कर्मक्षय का रुप नहीं है। अर्हन्त है कर्मक्षय का रुप और अर्हन्त से ऊपर हैं तीर्थंकर। अर्हन्त है आध्यात्मिकता का पूर्ण रुप। वे नीचे बैठते हैं और तीर्थंकर सिंहासन पर है बैठते हैं। क्या कारण है?

इसका उत्तर दिया है आचार्य हरिभद्रसूरि ने कि तीर्थंकर की सर्वोत्कृष्ट पुण्य प्रकृति है और वे परार्थ होते हैं, स्वार्थी नहीं। तीर्थंकर होने में अपनी कोई प्रयोजन-सिध्दी नहीं है। अर्हन्त हो गये तो हो गये बस सिध्द होना निश्चित हो गया उनका। लेकिन तीर्थंकर जो हैं वे परार्थ होते हैं। अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए होते हैं। वे लोगहियाणं हैं। वे विश्वहितंकर हैं। इसलिए लोक प्रदीप हैं तीर्थंकर। यह पुण्य प्रकृति का फल है। पुण्य प्रकृति कौन-सी है उनकी? क्या छत्र चामरादि पुण्य प्रकृति है? वह तो साधारण है। चूँकि उनका जीवन परार्थ है। तीर्थंकर परार्थ होता है। दूसरों के कल्याण के लिए, हित के लिए होता है। वह दूसरों को बोध देनेवाला होता है। तीर्थंकर के अतिरिक्त दूसरों के द्वारा व्यक्ति उतना बोध नहीं प्राप्त कर सकता है। उनकी वाणी के अतिशय होते हैं। चोतीस अतिशय तीर्थंकर की वाणी के होते हैं, केवलज्ञानी के नहीं। इसका अभिप्राय यह हुआ कि जैन परम्परा एकान्त आध्यात्मिकता की प्रतिपादक नहीं है। तीर्थंकर का जो लोकहित रुप है, वह परार्थ है। स्वार्थ है ही नहीं उसमें। अर्हन्त होते ही स्वार्थपूर्ण हो चुका, स्व तो पूर्ण हो चुका है उनका। तीर्थंकर का रुप परार्थ है, विश्वकल्याण का मंगलमय रुप है। दूसरों के अंधकार को दूर करने के लिए हैं वे। दूसरों को दुखों से, कष्टों से मुक्त करने के लिए हैं वे। जिधर भी आते हैं उधर मंगल और कल्याण की अमृत वर्षा होती है। अमृत गंगाएँ बह निकलती हैं। अतिशय है उनका कि कांटे अधोमुख हो जाते हैं। फूल ऊर्ध्वमुख हो जाते हैं। हर चीज उनकी ऊर्ध्वमुखी है। बहुत ऊँचाई की ओर जाती है। जैसे दीपक की लौ हमेशा ऊपर जाती है। मशाल जल रही हो और अगर कोई उसे नीचा भी करें तब भी ज्वाला की लपटें उसकी ऊपर ही जायेंगी। भगवान महावीर अपने साधनाकाल में जब थे सुख में रहे तो क्या, दुख में रहे तो क्या, उपसर्ग रहे तो क्या, जयजयकार रहे तो क्या। सर्वत्र वे ऊर्ध्वमुखी रहे हैं। ऊर्ध्व दिशा में रहे हैं। ऊर्ध्वज्योति रही है उनकी।

जीवन में सुख-दुख उत्थान-पतन आते हैं लेकिन तुम्हारी जो चेतना है, तुम्हारा जो विवेक है, पुरुषार्थ है वह हमेशा ऊर्ध्वमुखी होना चाहिए। आचार्यों ने अपनी स्तुति में प्रभु के लिए 'अद्‌भुत्‌गति' शब्द का प्रयोग किया है। उनकी गति को आप पकड़ नहीं सकते। इसलिए अद्‌भूत गति कहा है।

पर्व अतीत को वर्तमान बनाता है–

पर्व हमारे भूतकाल को वर्तमान बनाता है। अतीत हमारा अतीत न रहे अतः पर्व अतीत को वर्तमान का रूप देता है। इस तरह से दीपावली को भगवान महावीर हमारे स्मरण में आते हैं। उस ज्योतिपुरुष का स्मरण जब करते हैं, उस विश्वात्मा का जब स्मरण करते हैं, उस समय अतीत नहीं रहता है। महावीर हमारे वर्तमान में जब अवतरित होते हैं तब घटना केवल भूतकाल की न रहकर वर्तमान की हो जाती है। हमारी स्मृति में आते ही वह अतीत वर्तमान हो जाता है। इसलिए जैन परम्परा की मध्यकाल में जो सोचने की पध्दति बन गई थी और जो आज भी चली आ रही है उसे बन्द करना होगा। महावीर को असली महावीर के रूप में समझना होगा। वह जो भूतकाल के महावीर है। इतिहास की घटना के एक दिव्य पुरुष। काल की ही घटना में बंध कर रह गये वे। उनका शरीर तो पंचमहाभूत में विलीन हो गया। लेकिन उनके जो संदेश हैं उनका जो दिव्य ज्योतिर्मय ज्ञान है, वह भूत क्या और महाभूत क्या, किसी में भी विलीन नहीं हो सकता। वह तो ऐसा दीपक है जो एकबार प्रज्वलित होने के बाद फिर कभी बुझा ही नहीं। दूसरे दीपक प्रज्वलित होते हैं और बुझ जाते हैं। वह महान दीपक ऐसा रहा कि एक बार प्रज्वलित हो गया तो बस हो ही गया। फिर कभी बुझा नहीं। बुझा नहीं इतना ही नहीं, ज्योति भी मन्द न पड़ी।

जो भी जब भी उस ज्योति का स्पर्श करेगा उसकी अपनी अमन्द ज्योति प्रज्वलित होगी। तथा दीप से दीप प्रज्वलित होकर दीपावली होगी।

निवृत्ति के नाम पर आलस्य दिया है –

हमारे विचार विवेक सीमित हो गये हैं। इसलिए महावीर की वाणी को जिस रुप में उपस्थित करना चाहिए था उस रुप में उपस्थित न कर सके। अमन्द ज्योति है वह। अमन्दानन्द सन्दोह है वह। वह तो क्षीण नहीं हुई। हमारी बौध्दिकता क्षीण हुई। इसलिए वह ज्योति हमें क्षीण होती हुई मालूम पड़ी। जनता को भी क्षीण होती हुई मालुम पड़ी। आवश्यकता है हम अपनी बुध्दि के द्वार खोले। हम अपने चिन्तन के द्वार को मुक्त रखे। जिससे उस महाप्रकाश का दिव्यरुप हमारे समक्ष प्रकाशमान हो सके। और हम जन-जन के मन के द्वार भी खोले और वे भी उस महाप्रकाश की ज्योति को ठीक से देख सके। उसके संदेश को ठीक तौर से मालूम कर सके। हमने एकान्त पक्ष को लेकर और निवृत्ति का सहारा लेकर, निवृत्ति के नाम से आलस्य दिया है लोगों को। निवृत्ति के नाम पर अकर्मण्यता दी है, अपने को भी और लोगों को भी। हमने एकान्त निवृत्ति के नाम पर यह परंपरा बना दी कि कुछ नहीं करना धर्म है और कुछ करना पाप है। यह बहुत बड़ी गलती की है हमने। उसके आधार पर मैं कहना चाहता था कि तीर्थंकर का लोकहितंकर, लोक कल्याण और लोकमंगल का रूप, समग्र विश्व के कल्याण का रूप है। वह तो कर्म की दिव्य ज्योति है, वह कर्मयोग का प्रतीक है एक प्रकार से। ज्ञानयोग तो सबके पास में है जितने भी केवलज्ञानी है। लेकिन कर्मयोग तीर्थंकर के पास है। दिव्य कर्मयोग तीर्थंकर के पास है।

भगवान महावीर का ऐसा ही तीर्थंकरत्व रहा है। जैसे ही उन्होंने उस अवस्था को प्राप्त किया और तीर्थंकरत्व की भूमिका पर पहुँचे। उसी समय उन्होंने दिव्य संदेश देना शुरु किया। उसमें उन्होंने नहीं देखा कि किस देश में उपदेश दे और किस देश में न दे। आर्य तथा अनार्य के भेद हमने बाद में खड़े किये हैं। उनके लिए तो जो उनके उपदेश को ग्रहण करे वह आर्य। सम्पूर्ण

मानवजाति को उन्होंने एक ही रूप में देखा हैं। इसीलिए कभी उत्तरी बिहार तो कभी दक्षिणी बिहार में विचरण करते रहे। धरती की गंगा को इधर से उधर पार करती रही उनकी ज्ञान गंगा। इस भौतिक गंगा को अनेकबार कभी उत्तर से दक्षिण में और कभी दक्षिण से उत्तर में पार करते रहे हैं प्रभु।

अर्हन्त जिन है और तीर्थंकर जिनेन्द्र है। क्यों जिनेन्द्र हैं? क्योंकि वह परार्थ है। वह जन-जन के कल्याण का मंगल प्रकाश है। मानवता के अभाव को, ज्ञान के अभाव को, विवेक के अभाव को दूर किया है तीर्थंकर भगवान ने। इसलिए वे मुत्ताणं मोयगाणं है। खुद मुक्त होनेवाले हैं और दूसरों को भी मुक्त करनेवाले हैं। खुद बुध्द है, जाग गये है और खुद ही जागकर नहीं रह गये हैं कि मैं जाग गया अब क्या लेना देना है मुझे। वह सबको जगाते रहे हैं। एकेक सोये हुए को जगाते रहे हैं। इसलिए बुध्द भी है और बोहयाणं भी है। इसलिए लोगहियाणं है, लोक हितंकर है वे।

अर्हन्त जिन और तीर्थंकर जिनेन्द्र क्यों?

क्या जैन दर्शन के इस दृष्टिकोण को हम सोचेंगे कभी? तीर्थंकर की महिमा के गान केवल हम अष्ट प्रतिहार्य के ही करके रह जाते हैं। फिर उनके अनन्त ज्ञान अनन्त दर्शन, अनन्त सुख और अनन्त शक्ति की बात करके रह जाते हैं। यह तो कोई खास बात नहीं है। यह तो होता रहता है। लेकिन सबसे बड़ी बात तो उनकी लोक कल्याण की है। वह विचारणीय है। इसलिए तीर्थंकरत्व जो हैं मैं कह रहा था अर्हन्त से क्यों ऊँचा है, जिन से क्यों ऊँचा है ? तीर्थंकर इसलिए ऊँचा है कि अन्य केवलज्ञानी स्वहित की सीमा में रह जाते हैं। थोड़ा-सा परार्थ करते हैं जरुर लेकिन लोकहितंकर जो है समग्र विश्वहितंकर जो है वह विश्वात्मा तीर्थंकर होता है।

आध्यात्मिक तो अर्हन्त है। केवलज्ञानी है। अनन्त चतुष्टयवाले हैं। तीर्थंकर को भी यह सब है लेकिन पुण्यरुप प्रकृति है उनकी जो विश्वहित और विश्व कल्याण की प्रतीक है।

इस दृष्टि से मैंने यह जो बात कही है। इसे सोचे, विचारे, चिन्तन करे तो मालुम पड़ेगा। कि जितनी भी पुण्य प्रकृतियाँ हैं उनमें सबसे उत्कृष्ट पुण्य प्रकृति तीर्थंकर की है। इसीलिए दूसरे अर्हन्त केवलज्ञानी आध्यात्मिक दृष्टि से महावीर के बराबर है, कोई फर्क अन्तरंग में नहीं है। लेकिन तीर्थंकर का रूप विश्वहितंकर का रूप है।

जो लोग जैन धर्म को एकान्त आध्यात्मवादी कहकर, एकान्त निवृत्तिमार्गी कहकर मूल्यांकन कर रहे हैं वे गलत हैं। हमारे यहाँ जो आध्यात्मिकता है वह है महत्त्वपूर्ण। लेकिन उस आध्यात्मिकता के साथ जो लोकहित है तीर्थंकर का वह सर्वोपरी है। इसलिए हम तीर्थंकर के उस रूप को जिनेन्द्र कहकर वन्दना करते है। ●

महाराष्ट्रातील जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा
सर्वांत खात्रीशीर, सर्वांत सोपा व सर्वांत स्वस्त मार्ग...
जैन जागृति - जाहिराती साठी संपर्क करा.